ISSN : 2760-X790

शोध भारती

त्रैमासिक पत्रिका

(An International Refereed Research Journal)

Vol.-I Issue-1
August-October 2016

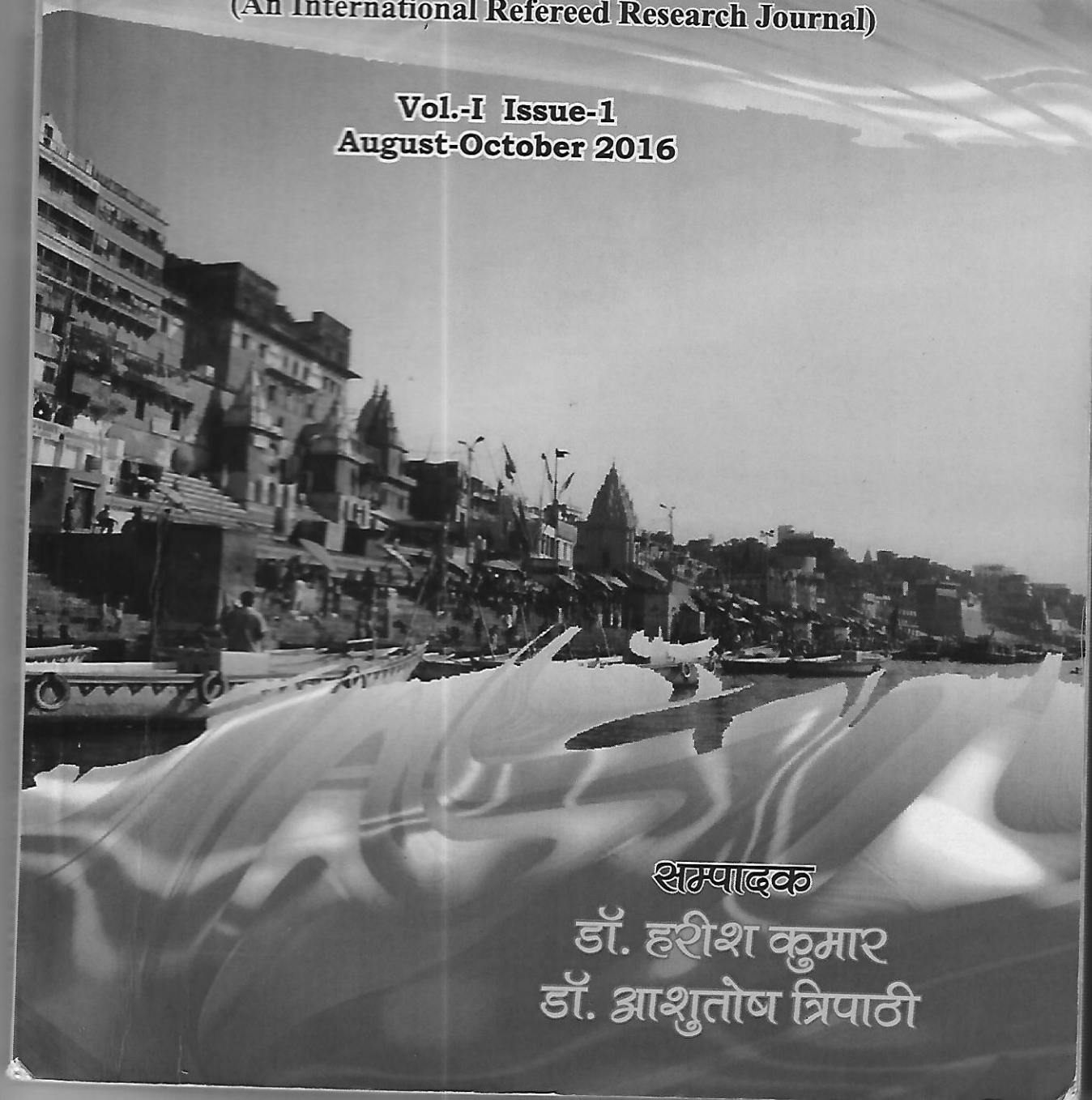

सम्पादक
डॉ. हरीश कुमार
डॉ. आशुतोष त्रिपाठी

अनुक्रमणिका

		पृ0सं0
1.	दिनकर काव्य में नारी : जननी रूप में	1–5
	डॉ0 हरीश कुमार	
2.	प्रगतिशील हिन्दी आलोचना का वैचारिक एवं सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य	6–11
	डॉ0 सत्यप्रकाश पाल	
3.	साकेत के भिक्षु–भिक्षुणी एवं उपासक–उपासकाओं का अध्ययन	12–15
	अमित कुमार मौर्या	
4.	'पूर्वमध्यकालीन वैष्णव धर्म व उनके प्रतीकों का मुद्राशास्त्रीय अध्ययन' (उत्तर भारतीय सदंर्भ में)	16–20
	हेमन्त सिंह	
5.	सुभद्रा कुमारी चौहान के कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ	21–24
	अरमा देवी	
6.	बौद्ध साहित्य में वर्णित काशी : एक अध्ययन	25–28
	आशीष कुमार दुबे	
7.	भारतीय कला एवं शिल्प में अलंकारिक अभिप्रायों का महत्व	29–32
	सुधाकर देव	
8.	नेपाल के प्राप्त अभिलेखों में कर व्यवस्था : एक अध्ययन	33–40
	दुष्यन्त कुमार शाह	
9.	शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों के पैरो की विस्फोटक शक्ति का आलोचनात्मक अध्ययन	41–48
	प्रकाश नारायण सिंह, डॉ. राजेश त्रिपाठी	

32.	भारतीय योग की दृष्टि	181–184
	मुकेश कुमार उपाध्याय डॉ0 अनिल कुमार	
33.	महर्षि पतंजलि का अष्टांगयोग व बुद्ध का विपष्यना	185–187
	संध्या दुबे	
34.	मानुष प्रेम भयेउ बैकुंठी	188–191
	भूपेन्द्र सिंह	
35.	महात्मा गाँधी एवं डा0 भीमराव अम्बेडकर की वैचारिक भिन्नता का स्वरूप	192–198
	धर्मेन्द्र नाथ चौबे	
36.	निराला की सरोज स्मृति	199–203
	धीरेन्द्र नाथ चौबे	
37.	कश्मीर कवि मंखक का उक्ति वैचित्र्य (देवताओं के सन्दर्भ में)	204–209
	श्याम बाबू	
38.	1857 का इतिहास लेखन तथा लोकसंस्कृति	210–216
	निवेदिता सिंह	
39.	*Banaras : A Cultural Assimilation , Unity and Diversity*	217–222
	Aftab Alam	
40.	सामाजिक रुप से कुसमायोजित बालकों की शिक्षा	223–232
	Meena Kumari	
41.	**बारहमासा : वियोग श्रृंगार की रसानुभूति**	233–237
	अनुश्री सिंह	
42.	**भारत में किसान समस्या और कविता** अरमान आनन्द	238–243
43.	**Exploration of Progressive Ideas: A Reading of K.A. Abbas's Short Story *The Sparrow*** Showkat Hussain Itoo	244–250

✷

सामाजिक रुप से कुसमायोजित बालकों की शिक्षा

(Education of Socially Mal-Adjusted Child)

Meena Kumari*

ऐसा देखा गया है कि कई बालक ऐसे होते हैं, जिनका व्यवहार सामान्य बालकों जैसा नहीं होता। कुछ अलग सा होता है। आमतौर पर माता–पिता इस बात की ओर तो सावधान होते हैं कि बालकों का शारीरिक स्वास्थ्य तो अच्छा हो परंतु वे उनके मानसिक स्वास्थ्य की उपेक्षा कर जाते हैं। परिणाम यह होता है कि बालक का व्यवहार सम्बन्धी संतुलन विचलित हो जाता है। बालक के मानसिक संतुलन का बिगड़ जाना अथवा विचलित हो जाना, इसे ही कुसमायोजन कहा जाता है।

सामाजिक रुप से कुसमायोजित बालक वे होते हैं जो सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक समस्याओं के कारण प्रायः कुसमायोजित होते हैं और इनका सामंजस्य काफी कठिन होता है। ये किसी के साथ जल्दी समायोजित नहीं होते, बल्कि कभी–कभी इनका व्यवहार आक्रामक अपराधियों जैसा या फिर संकोची हो जाता है। मूल रुप में ये वे बालक होते हैं जिनकों कभी प्रेम व सहानुभूति नहीं मिला या फिर उनके साथ खराब बर्ताव किया गया हो। विशिष्ट बालक वह है जो शारीरिक रुप से अक्षम, मानसिक रुप से अक्षम तथा सामाजिक रुप से कुसमायोजित है। सामाजिक रुप से कुसमायोजित बालक को पहचानना अन्य विशिष्ट बालकों की पहचान से कठिन है। एक अच्छे सामंजस्य की समस्या बालक में अपने अंदर से ही उत्पन्न होती है। कभी–कभी बाहर की दशाएं भी प्रभाव डालती हैं। इन दशाओं के विषय में माता–पिता और अभिभावक प्रायः अनभिज्ञ रहते हैं।

कुसमायोजन की अर्थ एवं परिभाषा –

'कुसमायोजन'– दो शब्दों से मिलकर बना है। 'कु' और 'समायोजन' 'कु' का अर्थ है– 'बुरा' और 'समायोजन' का अर्थ है– 'संतुलन' अर्थात् 'बुरा संतुलन' अथवा 'कुसमायोजन'। एक बालक का होता है– सामान्य व्यवहार वाला। वह अन्य बालकों के साथ अच्छी प्रकार से मिल–जुलकर रहता है, उसका व्यवहार संतुलित होता है। एक दूसरा बालक है, जो दूसरे बालकों पर नकारात्मक असर डालता है जसे उन्हें हानि पहुंचाना, गाली देना इत्यादि। ऐसे व्यवहार को कुसमायोजित व्यवहार की संज्ञा दी गई है।

भिन्न–भिन्न मनोविज्ञान के आचार्यों ने कुसमायोजन को निम्न शब्दों में परिभाषित किया है–

---

*Assist. Prof.(Special Edu.), Guru Ghasidas University, Bilaspur(C.G.) email-meenasgv@gmail.com, mob- no. 9453502713